AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

i;koj.k lij{k.k e efgykvk dh Hkfedk

ORIGINAL ARTICLE

Authors

pruk xtiky
शोधार्थी, भूगोल विभाग
शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

M,- dcj çlg x:ip
भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग, छत्तीसगढ़, भारत

'kks/k lkj

i;koj.k ekuo thou i)fr d fy, ;fn vfuok;l vx g rk bldk lj{k.k vkj cpko Hkh ekuo dkije dÙk0; cu tkrk gA i;koj.k lj{k.k ekuoh; thou d fy, vfr vko';d fo"k;&oLrq cu x;k gA bl fn'kk e ofÜod ,o Hkkjr nkuk gh Lrjk ij vud ç;kl ,o vkUnkyu vuojr tkjh gA i;koj.k lj{k.k e L=h dh Hkfedk egRoi.k gA i;koj.k dk cpku d fy, fL=;k u ;kxnku fn;k gA efgyk;s ofnd dky l gh i;koj.k lj{k.k d i{k e jgh g] mldk mnkgj.k ryl h itk ,o oV o{k itk gA Hkkjrh; efgyk;s lnio bl fn'kk e dk;l'khy jgh gA gekjh Hkkjrh; lL—fr dk n[ku ij jhfr&fjokt] ijEijkvk e i;koj.k lj{k.k d çfr tkx#drk fn[kkÃ nrh jgh gA Hkkjrh; efgyk;s lnio l gh i;koj.k lj{k.k e i#"kk l vkx jgh g] bldk irk ge fofHkUu i;koj.k d vkUnkyuk dk vè;;u dju ij pyrk gA efgykvk u i;koj.k o ouk dh j{kk d fy;s dÃ vkUnyuk e Hkkx fy;k bue vxi.kh Hkfedk fuHkk;h g vkj viu ç.kk dh vkgfr rd nh gA dky ekDl dk dFku g fd ^^lf"V e dkÃ Hkh cMk l cMk lkekftd ifjorlu efgykvk d fcuk ugÈ gk ldrk**A vr% efgykvk u lnio gh i;koj.k lj{k.k dh ckr dh gA

e[; 'kCn

i;koj.k lj{k.k] vkUnkyu] efgyk;s] çk—frd okrkoj.kA

çLrkouk

मानव ने अपनी भोगवादी संस्कृति के बहकावे में आकर पर्यावरण में इतनी अधिक विकृति पैदा कर दी है, कि आज प्रदूषण रूपी दानव ने विकराल रूप धारण कर लिया है, जो कि न केवल मानव के लिए बल्कि समस्त जीव जगत के लिए घातक सिद्ध हो रहा है और इस प्रकार पर्यावरण प्रदूषण की समस्या का एक मात्र उपाय है सम्पूर्ण जनमानस को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना। पर्यावरण संरक्षण किसी एक देश या व्यक्ति की समस्या न होकर विश्व के समस्त देशों एवं सम्पूर्ण जनमानस की समस्या है जिससे निपटने के लिए हमें एकजूट होकर प्रयास करने पड़ेंगे तभी परिणाम अच्छे प्राप्त होंगे।

पर्यावरण संरक्षण से तात्पर्य ऐसे विकास से हैं जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग तथा उनका नवीनीकरण बाधित न हो। पर्यावरण संरक्षण का लक्ष्य है ''विनाशरहित विकास''। आज पर्यावरण का संरक्षण और सतत् विकास आवश्यक हो गया है और वर्तमान में पर्यावरण संरक्षण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त रूप से प्रयास किए जा रहे है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों, सम्मेलनों व संगोष्ठियों व विशेष कार्यों व सामूहिक चर्चाओं द्वारा सम्पूर्ण जनमानस को पर्यावरण चेतना के प्रति जागरूक करने के प्रयास किए जा रहे है तथा भारतीय संविधान में भी पर्यावरण की सुरक्षा एवं सरक्षा के सम्बन्ध में वर्ष 1976 में संविधान के 42वें संशोधन के अन्तर्गत राज्य एवं नागरिकों को राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत अधिकार प्रदान किए गए है। यह अधिकार संविधान के अनुच्छेद 47 अनुच्छेद 48(क), अनुच्छेद 48 क(छ) अनुच्छेद 51 क, अनुच्छेद 51 क(छ) आदि अनुच्छेदों के माध्यम से देश के प्रत्येक नागरिक को यह मूलभूत दायित्व सौपा गया है कि सुरक्षा एवं संवर्द्धन के लिए प्रयत्नशील रहे। अतः इस प्रकार पर्यावरण संरक्षण के लिए संविधान के प्रावधानों अधिनियमों एवं कानून निर्माण के अलावा जो सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है वह है पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करना, जिसके विभिन्न पक्ष होने चाहिए, जैसे सेमीनार, संगोष्ठी, प्रशिक्षण कार्यक्रम, प्रदर्शनी, प्रतियोगिताओं का आयोजन, शिक्षण संस्थाओं, गैर सरकारी संस्थाओं एवं समाज सेवी संगठनों द्वारा पर्यावरण जागरूकता के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता एवं पर्यावरण जागरूकता के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण है।

'kks/k dk mís';

- पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
- पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों की जागरूकता को बढ़ाना।

v/;;u {ks= dh lkekU; tkudkjh

प्रस्तुत शोध पत्र में अध्ययन क्षेत्र के रूप में भारत देश के क्षेत्रीय स्तर पर अलग–अलग राज्यों में महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों के अनुसार क्षेत्र लिये गये हैं, जिनमें से भारत के राजस्थान राज्य के जोधपूर जिला, उत्तराखण्ड राज्य के चमोली व अल्मोड़ा जिला को लिया गया है, इनके अलावा कर्नाटक राज्य, मध्यप्रदेश राज्य एवं छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले व बस्तर जिले में भी महिलाओं द्वारा जो एतिहासिक कार्य हुए हैं उसके आधार पर भी विश्लेषण किया गया हैं।

'kks/k i)fr

प्रस्तुत आलेख के अन्तर्गत वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन पर बल दिया गया है। द्वितीयक स्त्रोत के अन्तर्गत भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए महिलाओं द्वारा किये गये आन्दोलनों के सन्दर्भ में पर्यावरण संरक्षण में महिलाओं द्वारा किए गए कार्यों एवं गतिविधियों व उनकी डायरियों, समाचार पत्रों, पत्र–पत्रिकाओं व पुस्तकों का अध्ययन कर चयनित विषय के लिए आंकड़े संग्रहित किए गए है तथा इसके साथ–साथ पर्यावरणविद् महिलाओं की आत्मकथाओं का विस्तृत अध्ययन करके पर्यावरण सुरक्षा में महिलाओं की भूमिका के सम्बन्ध में विभिन्न तथ्यों व आंकड़ों का संकलन कर प्रस्तुत विषय पर शोध कार्य किया गया है। अतः इन स्त्रोतों की प्रविधियों के माध्यम से किया गया अध्ययन व्यावहारिक एवं विश्लेषणात्मक है जो कि शोध कार्यों में वैज्ञानिक वैधता स्थापित करने के साथ–साथ शोध को यथार्थ बनाने में भी सहायक है।

i;kZoj.k laj{k.k esa efgykvksa dh Hkwfedk

पर्यावरण और महिलाएं परस्पर एक दूसरे से यथार्थ रूप से जुड़े हुए है, इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं है। पर्यावरण संरक्षण के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष में महिलाओं द्वारा समय–समय पर आन्दोलन चलाकर आम नागरिको को पर्यावरणीय चेतना का सन्देश दिया गया, जिसके अन्तर्गत भारत में पर्यावरण संरक्षण के लिए महिलाओं द्वारा किये गये प्रमुख आन्दोलनों का संक्षिप्त परिचय निम्न हैः

1. भारत में सर्वप्रथम राजस्थान में जोधपुर जिलें में 1730 ई. में महिलाओं के द्वारा पर्यावरण सरंक्षण के लिए

चलाये गये खेजड़ी आन्दोलन द्वारा जो सराहनीय योगदान दिया गया वह बहुत ही महत्वपूर्ण रहा। जिसके अन्तर्गत खेजड़ली गाँव में अमृतादेवी के नेतृत्व में महिलाओं ने खेजड़ी के वृक्षों की रक्षा के लिए प्राणों का बलिदान कर दिया था। इस आन्दोलन में गाँव के कुल 363 विश्नोईयों ने पेड़ों की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहूति दे दी। अतः इस प्रकार इस आन्दोलन में महिलाओं ने पेड़ों की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर सम्पूर्ण जनमानस को पर्यावरणीय चेतना का सन्देश दिया।

2. इसके पश्चात् भारत में पर्यावरण सुरक्षा के लिए महिलाओं द्वारा 1973–74 में भारत के उत्तराखण्ड राज्य में सुन्दर लाल बहुगुणा द्वारा प्रारम्भ किये गये चिपको आन्दोलन में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया गया। इस आन्दोलन में उत्तराखण्ड की महिलाओं ने गौरा देवी के नेतृत्व में विशेष रूप से 1974 में भाग लिया, जिसके अन्तर्गत महिलाओं ने चमोली जिलें में वृक्षों से चिपक कर उनको काटने से रोका। इस आन्दोलन में समाज के सभी वर्गों के स्त्री पुरूष शामिल थे, परन्तु इस आन्दोलन महिलाओं की सहभागिता महत्वपूर्ण रही। सन् 1987 में इस आन्दोलन को सम्यक् जीविका पुरस्कार (राइट लाइवली हुड पुरस्कार) से सम्मानित किया गया।

3. इसी क्रम में लगभग 1980 में चिपको आन्दोलन के प्रारम्भ एवं विकास की भांति उत्तराखंड में सुरक्षित पर्यावरण के लिए अल्मोड़ा जिलें में खनन विरोधी आन्दोलन विकसित हुआ। कई वर्ष पूर्व कानपूर के एक ठेकेदार ने सरकार से अल्मोड़ा के खिराकोट गाँव के क्षेत्र में खड़िया मिट्टी की खुदाई का पट्टा लिया था लेकिन इस गाँव की स्त्रियों ने खुदाई के दुष्प्रभाव को देखा कि खान का कचरा उनके संरक्षित वन को नष्ट कर रहा है। वर्षा के दिनों में खदान की यह धूल बहकर खेतों में पहुँच जाती है तथा उनमें पत्थर की तरह जम जाती है जिससे खेतों की जुताई असंभव हो जाती है तो गाँव की सभी स्त्रियों ने संगठित होकर खान में काम करने से मना कर दिया तथा पुरूषों पर भी खान में काम बंद करने का दबाव डाला और ठेकेदार के विरूद्ध आन्दोलन करते हुए अपने विरोध को इन शब्दों मे व्यक्त किया कि ''उनकी खुदाई हमारी जिंदगी को तबाह कर रही है, हमारे बच्चों के भविष्य से खिलवाड़ कर रही है हम उन्हें कैसे खुदाई करने दे।'' ठेकेदार ने स्त्रियों के आन्दोलन को कुचलने के लिए अनेक उपक्रम किए, लेकिन महिलाओं ने हार नहीं मानी बल्कि अदालतों के माध्यम से भी महिलाओं की लड़ाई जारी रही। तत्पश्चात दो वर्षो के बाद जिला मजिस्ट्रेट ने गाँव का दौरा करने और होने वाले नुकसान को अपनी आँखों से देखने की रजामंदी दी तथा मौका मुआयना करने के पश्चात् जिलाधिकारी इतने द्रवित हुए कि उन्होंने फौरन मुकदमा निरस्त कर दिया और महिलाएँ मुकदमा जीत गई व सन् 1982 के आखिरी दिनों में औपचारिक रूप से खुदाई कार्य बंद कर दिया गया।

4. इसी क्रम में अगस्त 1982 में दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में भी अप्पिको आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, जो कि उत्तरी भारत के चिपको आन्दोलन से प्रेरित था। कन्नड़ भाषा के अप्पिको शब्द चिपको का ही पर्याय शब्द है। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में युवा एवं महिलाएँ शामिल थे।

5. सन् 1984 की भोपाल त्रासदी से गैस पीड़ित महिलाओं द्वारा व्यापक आन्दोलन का उदय हुआ। दो और तीन दिसम्बर सन् 1984 की रात को बहुराष्ट्रीय अमेरिकी कम्पनी यूनियन कार्बाइड के स्वामित्व वाले भोपाल कीटनाशक संयत्र से लगभग 20 टन मिक (मिथाइल आइसोसायनेट) गैस बह गई, जिसके परिणामस्वरूप आज के सरकारी आंकड़े के अनुसार उसमें 4000 से अधिक लोगो की मृत्यु एवं 50000 से अधिक लोग प्रभावीत हुए थे। यह गैस र्निगंध तथा अदृश्य है इसलिए अनुमानतः भोपाल के लगभग सारे पुराने शहर में गैस फैल गई थी।

प्रारम्भ से ही केवल गैस पीड़ित महिलाएं ही राहत चिकित्सा तथा सूचना सम्बन्धी अभियान में सर्वाधिक सक्रिय रही और आगे चलकर पीड़ित महिलाओं का संगठन जो कि बाद में आन्दोलन के मुख्य सूत्रधार के रूप में उभरा, वह गैस पीड़ित महिलाओं का संगठन था।

जब भारत सरकार यूनियन कार्बाइड के साथ एक शर्मनाक समझौता करती दिखाई पड़ी तो संगठन ने समझौते विरोध में व्यापक अभियान शुरू किया जिसके अन्तर्गत प्रदर्शनों, मुकदमें बाजी, प्रचार तथा अभिप्रेरण आदि रणनीतियाँ प्रयोग की गई और अन्त में 1989 नई सरकार के चुनाव के साथ ही महिला संगठन को

एक बड़ी सफलता हाथ लगी।

6. इसी क्रम में सन् 1985 मेघा पाटकर के नेतृत्व में नर्मदा घाटी की जैव विविधता को बचाने तथा मूल आदिवासियों के सांस्कृतिक पर्यावरण की रक्षा के लिए नर्मदा बचाओ आन्दोलन चलाया जा रहा है, जिसके साथ अब अरूंधति राय भी हो गई है। इस प्रकार सामान्यतः पर्यावरण संरक्षण के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष में महिलाओं द्वारा अनेक आन्दोलन चलाकर पर्यावरणीय चेतना के प्रति जागरूकता का जो संन्देश दिया वह अतिसराहनीय कार्य था।
7. इसी क्रम में छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में अहम कदम उठाया गया है। बस्तर जहाँ प्रकृति की सौंदर्यता झलकती है, वहाँ की खूबसूरती देखने हजारों पर्यटक उमड़ पड़ते हैं। वहाँ के स्थलों को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिए एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए जिला प्रशासन की पहल पर पर्यटन समिति की महिलाओं व स्व सहायता समूह की महिलाओं द्वारा कागज के थैले बनाए जा रहे हैं, साथ ही वहाँ आने वाले पर्यटकों को भी इसके उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।
8. इसी प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले में प्रत्येक वर्ष राज्य के निर्माण के उत्सव के रूप में पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु छात्र–छात्राओं द्वारा स्टॉल लगाकर लोगों को जागरूक किया जाता है। इस वर्ष 2022 के राज्योत्सव में स्टॉल के प्रवेश द्वार पर आकर्षक ढंग से लोगों को सिंगलयूज प्लास्टिक पर 1 जुलाई 2022 से प्रतिबंध को दर्शाकर जागरूक किया गया, जिसमें छात्रों द्वारा इस पहल में महत्वपूर्ण योगदान रहा।
9. इसी तरह छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले में पारिस्थितिकी तंत्र को बेहतर बनाने हेतु जलवायु से संबंधित समस्याओं के निपटान के लिए आर्द्रभूमि संरक्षण कार्यक्रम चलाया गया, इसके लिए वन व जलवायु परिवर्तन विभाग द्वारा ग्रीन क्लब एवं कलिंगा विश्वविद्यालय के सहयोग से जन जागरूकता का कार्यक्रम चलाया गया। इसके तहत 2 फरवरी को विश्व आर्द्र भूमि दिवस के अवसर पर लोगों को विश्वविद्यालय व स्कूली छात्रों ने सफाई अभियान चलाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया व उन्होंने 285 किलोग्राम कचरा इकट्ठा कर नगर पालिकाओं को उचित निपटान हेतु सौंपा।

छत्तीसगढ़ में कुल 35 वेटलैंड है। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा 2023 में विश्व आधार भूमि दिवस के अवसर पर यह वाक्य "आद्रभूमि बहाली" दिया गया। इसके अंतर्गत पर्यावरण की स्थिरता को बनाए रखा जा सके एवं आर्द्र भूमि को पारिस्थितिक तथा स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त हो, यह सुनिश्चित किया जा सके का कार्यक्रम चलाया गया।

i;kZoj.k lja{k.k ds çfr yksxksa dh tkx:drk

''भारत में पर्यावरणीय आन्दोलन एवं महिला नेतृत्व'' पर अपने निर्देशक के मार्गदर्शन व अपने गहन अध्ययन तथा विश्लेषनात्मक दृष्टिकोणों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति महिलाओं की भागीदारी व उनके द्वारा सम्पूर्ण भारत को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने की भूमिका को समकालीन समाज से जोड़े जाने का प्रयास है लेकिन इसके अतिरिक्त अध्ययन के उद्देश्य के रूप में पर्यावरण के प्रति लोगों में जागरूकता की आवश्यकता है जिसे निम्न प्रकार से उल्लेखित किया गया हैः

1. पर्यावरण के विभिन्न घटको का मानव क्रिया–कलापों पर प्रभाव से लोगों को अवगत कराना।
2. पर्यावरण के प्रति जन–चेतना जागृत करना तथा इसके प्रति अवबोध विकसित करना।
3. पर्यावरण संरक्षण हेतु उर्वरकों व कीटनाशकों के प्रयोग को कम करना, बिजली, पानी, गैस का कम से कम उपयोग करना।
4. पर्यावरण व वन्य जीव रक्षा के पुनीत कार्यो में महिलाओं की सक्रियता से बदलाव को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना।
5. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में सर्वप्रथम पर्यावरण संरक्षण के लिए अमृता देवी द्वारा किए गए कार्यों की वर्तमान में महत्ता बताकर युवा पीढ़ी को पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का बोध कराना।

6. भारत में सुरक्षित पर्यावरण के लिए महिलाओं द्वारा किए गए विभिन्न आन्दोलनों की समकालीन समाज में प्रांसगिकता को उल्लेखित करना।
7. वैश्विक स्तर पर वंगारी मथाई द्वारा चलाए गए ''ग्रीन बेल्ट आन्दोलन'' की महत्ता के आधार पर 21वीं सदी के विश्व को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक करना।
8. सरकार द्वारा पर्यावरण संरक्षण के कार्यों मे लोगों को योगदान देना आवश्यक है जैसे कि घर के कचरे को सही तरीके से अलग कर, वृक्षारोपण कर, जैविक पदार्थों का उपयोग कर, जल का उचित उपयोग कर, प्लास्टिक का कम से कम उपयोग कर मानव अपना सहयोग दे सकते हैं।

fu"d"k

पर्यावरण के उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि पर्यावरण के अन्तर्गत बहुत–सी दशाओं का समावेश है। इसके अन्तर्गत वे सभी वस्तुएँ और दवाएँ सम्मिलित है जिनका हम अपने चारो ओर अनुभव करते है। इस जटिल समग्रता को समझने के लिए आवश्यक है कि हम पर्यावरण में सम्मिलित की जाने वाली सभी दशाओं का संक्षेप में विश्लेषण करें एवं उनका उचित उपयोग करें।

lUnHkZ lwph

1. गर्ग, बी.एल. (2003). पर्यावरण प्रकृति और मानव, शब्द साधना, अजमेर, प्रथम संस्करण।
2. ओझा, डी.डी. (1999). पर्यावरण अवबोध, पवन कुमार शर्मा, साईन्टिफिक पब्लिशर्स, जोधपुर।
3. चातक, गोविन्द (1991). पर्यावरण और संस्कृति का संकट, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण।
4. सक्सेना, एच.एम. (1994). पर्यावरण तथा परिस्थितिकी भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. साहू, बनवारी लाल (1997). पर्यावरण संरक्षण एवं खेजड़ी बलिदान, बोधि प्रकाशन जयपुर 302015 द्वारा प्रकाशित।
6. सिंह, राजीव कुमार, (2009). पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
7. यादव, वीरेन्द्र सिंह, (2010). 21वीं सदी का पर्यावरवण आन्दोलन : चिन्तन के विविध आयाम, ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।
8. सक्सेना, एच.एम.,(2009). पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
9. शर्मा, डॉ. मालती (2011). पर्यावरण अध्ययन, शिवांक प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण।
10. दैनिक शस्कर, जयपुर।
11. दैनिक जागरण, नई दिल्ली।
12. दी हिन्दू समाचार पत्र कस्तूरबा एण्ड सन्स लिमिटेड, नई दिल्ली।
13. कुरूक्षेत्र प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
14. नई दुनिया, जगदलपुर, छत्तीसगढ़।
15. https://dprcg.gov.in

––==00==––